INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL
ISSN NO : 2230-7850
IMPACT FACTOR : 5.1651 (UIF)
VOLUME - 15 | ISSUE - 11 | DECEMBER – 2025

पारंपरिक और आधुनिक समाज संरचना में डिजिटल इंडिया का प्रभाव : रीवा जिले के विशेष सन्दर्भ में

ऊषा पटेल
शोधार्थी समाजशास्त्र
शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

डॉ. रचना श्रीवास्तव
प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष समाजशास्त्र
शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

सारांश –

डिजिटल इंडिया ने न केवल सूचना और संचार तकनीक को बढ़ावा दिया है, बल्कि सामाजिक, शैक्षिक और आर्थिक बदलावों में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। रीवा जिले के ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में किए गए सर्वेक्षण, गहन साक्षात्कार और फोकस ग्रुप चर्चा के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला गया कि डिजिटल माध्यम ने युवाओं और महिलाओं को सशक्त बनाया है, शिक्षा और रोजगार के अवसरों को बढ़ाया है और पारंपरिक निर्णय प्रक्रियाओं में बदलाव लाया है। सर्वेक्षण में पाया गया कि शहरी क्षेत्रों में स्मार्टफोन और इंटरनेट का उपयोग अधिक है, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में भी डिजिटल साक्षरता धीरे–धीरे बढ़ रही है। महिलाएं अब सरकारी योजनाओं, बैंकिंग और स्वरोजगार के लिए डिजिटल माध्यम का उपयोग कर रही हैं। युवा वर्ग ऑनलाइन शिक्षा और नौकरी के अवसरों के माध्यम से व्यक्तिगत निर्णय लेने में सक्षम हुए हैं। डिजिटल असमानता, प्रशिक्षण की कमी और पारंपरिक सांस्कृतिक मूल्यों पर संभावित प्रभाव अभी भी चुनौती बने हुए हैं। इसलिए, डिजिटल जागरूकता, प्रशिक्षण कार्यक्रम और स्थानीय स्तर पर संवेदनशील सामाजिक नीतियाँ आवश्यक हैं।

मुख्य शब्द – डिजिटल इंडिया, पारंपरिक समाज संरचना, आधुनिक समाज, रीवा जिला, ग्रामीण और शहरी समाज।

प्रस्तावना –

भारत में 21वीं सदी में तकनीकी प्रगति ने समाज के हर क्षेत्र को प्रभावित किया है। सूचना और संचार तकनीक ने न केवल आर्थिक और शैक्षिक अवसरों को बढ़ाया है, बल्कि सामाजिक संरचना और सांस्कृतिक जीवन को भी प्रभावित किया है। डिजिटल इंडिया कार्यक्रम, जिसकी शुरुआत 2015 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा की गई थी, इसी दिशा में एक महत्वपूण कदम है। इसका उद्देश्य भारत को डिजिटल रूप से सशक्त बनाना, सरकारी सेवाओं को डिजिटलीकरण करना, डिजिटल साक्षरता को बढ़ाना और समाज में सूचना तक समान पहुँच सुनिश्चित करना है। रीवा जिले जैसे ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में, पारंपरिक और आधुनिक समाज संरचना के बीच संतुलन बनाए रखना अत्यंत चुनौतीपूर्ण है। पारंपरिक समाज संरचना में परिवार और समुदाय

का बड़ा महत्व होता है। यहाँ निर्णय लेने की प्रक्रिया सामूहिक और अनुभव पर आधारित होती है। दूसरी ओर, आधुनिक समाज में तकनीकी प्रगति, व्यक्तिगत स्वतंत्रता, शिक्षा और रोजगार के अवसरों का डिजिटल माध्यम से अधिक प्रभाव पड़ता है। इन दो विरोधाभासी संरचनाओं के बीच डिजिटल इंडिया पहल ने नया स्वरूप और दिशा प्रदान की है।

रीवा जिले में डिजिटल तकनीक की पहुँच ने समाज के विभिन्न वर्गों, विशेषकर युवाओं और महिलाओं, को सशक्त बनाया है। मोबाइल फोन, स्मार्टफोन, इंटरनेट और डिजिटल एप्लीकेशन के माध्यम से लोग अब सरकारी योजनाओं, बैंकिंग सेवाओं, शिक्षा और रोजगार के अवसरों तक आसानी से पहुँच प्राप्त कर सकते हैं। ई–गवर्नेंस और डिजिटल प्लेटफॉर्म ने प्रशासन और नागरिकों के बीच सीधा संपर्क स्थापित किया है, जिससे पारंपरिक बिचौलियों की भूमिका कम हुई है। हालांकि, डिजिटल तकनीक का प्रभाव केवल सुविधाओं तक ही सीमित नहीं है। इसका प्रभाव समाज के मूल्य, सांस्कृतिक आदतें और पारंपरिक जीवनशैली पर भी पड़ता है। उदाहरण के लिए, सोशल मीडिया और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म ने सामाजिक संपर्क और संवाद के नए तरीके पेश किए हैं, लेकिन इसके साथ ही पारंपरिक सामुदायिक और पारिवारिक आदतों में बदलाव भी देखने को मिला है। ऐसे में यह आवश्यक हो जाता है कि डिजिटल पहल सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों को संतुलित तरीके से अपनाई जाए।

इस शोध का उद्देश्य रीवा जिले में डिजिटल इंडिया पहल के प्रभाव का विश्लेषण करना है। इसमें यह अध्ययन किया गया है कि कैसे डिजिटल तकनीक ने पारंपरिक और आधुनिक समाज संरचना में परिवर्तन लाया है और यह परिवर्तन विशेष रूप से युवाओं, महिलाओं, शिक्षा और रोजगार के अवसरों में कैसे परिलक्षित होता है। इसके अलावा, यह शोध डिजिटल असमानता, प्रशिक्षण की कमी और सामाजिक मूल्य पर डिजिटल प्रगति के संभावित प्रभावों को भी उजागर करता है। रीवा जिले का चयन इसलिए किया गया है क्योंकि यह मध्य प्रदेश का एक ऐसा जिला है जहाँ ग्रामीण और शहरी समाज का मिश्रण स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है। यहाँ डिजिटल पहल का प्रभाव दोनों समाजों पर अलग–अलग रूप से देखने को मिलता है। ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल साक्षरता धीरे–धीरे बढ़ रही है और पारंपरिक जीवनशैली अधिक प्रबल है, जबकि शहरी क्षेत्रों में आधुनिक समाज संरचना अधिक प्रबल है और डिजिटल माध्यमों का व्यापक उपयोग किया जा रहा है।

इस शोध के माध्यम से यह समझने की कोशिश की गई है कि डिजिटल इंडिया ने रीवा जिले के समाज में किस प्रकार बदलाव लाया है, इसके सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव क्या हैं और इसे और अधिक प्रभावी बनाने के लिए किन क्षेत्रों में सुधार की आवश्यकता है। शोध में सर्वेक्षण, गहन साक्षात्कार और फोकस ग्रुप चर्चा जैसी विधियों का उपयोग करके डेटा एकत्र किया गया है, जिससे निष्कर्षों की प्रामाणिकता और विश्वसनीयता सुनिश्चित की जा सके।

विश्लेषण –

1. डिजिटल पहुँच और तकनीकी साक्षरता – रीवा जिले में डिजिटल इंडिया पहल ने तकनीकी पहुँच और डिजिटल साक्षरता के क्षेत्र में महत्वपूर्ण बदलाव लाया है। सर्वेक्षण के अनुसार, जिले के शहरी क्षेत्रों में लगभग 92 प्रतिशत परिवारों के पास स्मार्टफोन है, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में यह आंकड़ा लगभग 68 प्रतिशत है। मोबाइल इंटरनेट और डिजिटल एप्लीकेशनों का उपयोग शिक्षा, बैंकिंग, स्वास्थ्य और सरकारी योजनाओं की जानकारी के लिए बढ़ा है। विशेष रूप से युवाओं में डिजिटल तकनीक का उपयोग शिक्षा और रोजगार के अवसरों तक पहुँच बढ़ाने में अधिक देखा गया। ई–लर्निंग प्लेटफॉर्म और ऑनलाइन कोर्सेज ने पारंपरिक कक्षाओं की सीमाओं को तोड़ा है। साथ ही, डिजिटल माध्यमों के माध्यम से युवा सरकारी योजनाओं, स्वरोजगार और सामाजिक कार्यक्रमों की जानकारी आसानी से प्राप्त कर पा रहे हैं।

2. पारंपरिक समाज संरचना पर प्रभाव – रीवा जिले में पारंपरिक समाज संरचना, जो परिवार और सामुदायिक निर्णयों पर आधारित है, डिजिटल तकनीक के प्रभाव से बदल रही है। सर्वेक्षण में यह पाया गया कि – युवा वर्ग अब परिवार के निर्णयों पर पूरी तरह निर्भर नहीं रहते और व्यक्तिगत निर्णय लेने लगे हैं। पारंपरिक ज्ञान और अनुभव के स्थान पर ऑनलाइन जानकारी पर भरोसा बढ़ा है। सामाजिक और आर्थिक गतिविधियों में पारिवारिक सहभागिता की तुलना में डिजिटल माध्यम के माध्यम से अधिक स्वतंत्रता मिली है। यह परिवर्तन

पारंपरिक सामाजिक ढांचे को प्रभावित कर रहा है, जिससे परिवार और समुदाय के भीतर नए प्रकार के संवाद और निर्णय लेने की प्रक्रियाएं विकसित हो रही हैं।

3. महिलाओं और समाज में सशक्तिकरण – डिजिटल इंडिया पहल ने महिलाओं को विशेष रूप से सशक्त बनाने में मदद की है। सर्वेक्षण में यह देखा गया कि लगभग 55 प्रतिशत महिलाएं मोबाइल और इंटरनेट का उपयोग करके बैंकिंग, सरकारी योजनाओं और स्वरोजगार संबंधी जानकारी प्राप्त कर रही हैं। महिलाओं में डिजिटल साक्षरता से आत्मनिर्भरता और निर्णय क्षमता बढ़ी है। ग्रामीण क्षेत्रों में महिला समूहों ने ऑनलाइन प्लेटफॉर्म का उपयोग करके सामाजिक और आर्थिक गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी शुरू की है। शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं की डिजिटल पहुँच ने महिला स्वास्थ्य और जीवनशैली में सुधार किया है।

4. शिक्षा और रोजगार पर प्रभाव – रीवा जिले में डिजिटल माध्यमों ने शिक्षा और रोजगार के अवसरों को व्यापक बनाया है। ऑनलाइन शिक्षा प्लेटफॉर्म ने ग्रामीण छात्रों को भी उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा उपलब्ध कराई है। डिजिटल कौशल और तकनीकी ज्ञान के माध्यम से युवाओं को स्थानीय और राष्ट्रीय स्तर पर रोजगार के अवसर प्राप्त हुए हैं। डिजिटल मार्केटिंग और ई–कॉमर्स के क्षेत्र में युवाओं और महिलाओं की भागीदारी बढ़ी है।

5. सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभाव – डिजिटल इंडिया पहल ने रीवा जिले में सामाजिक और सांस्कृतिक बदलावों को भी प्रभावित किया है। सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्म ने लोगों के बीच संपर्क और संवाद को बढ़ाया है। पारंपरिक उत्सव, रीति–रिवाज और सामुदायिक गतिविधियों में डिजिटल माध्यम का मिश्रित प्रभाव देखा गया है। सामाजिक जागरूकता और सरकारी योजनाओं की जानकारी अब तेजी से फैल रही है, जिससे समाज में निर्णय लेने की प्रक्रिया और भागीदारी में सुधार हुआ है।

6. चुनौतियाँ और सीमाएँ – अभी भी रीवा जिले में डिजिटल इंडिया के प्रभाव को पूरी तरह अपनाने में कुछ चुनौतियाँ हैं – ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट कनेक्टिविटी और डिजिटल उपकरणों की कमी। प्रशिक्षण और डिजिटल साक्षरता कार्यक्रमों की अपर्याप्तता। सांस्कृतिक और पारंपरिक मूल्यों पर डिजिटल माध्यम के संभावित नकारात्मक प्रभाव। डिजिटल असमानता के कारण समाज के कुछ वर्ग अभी भी पीछे हैं।

निष्कर्ष –

रीवा जिले में डिजिटल इंडिया पहल ने पारंपरिक और आधुनिक समाज संरचना दोनों पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाला है। डिजिटल तकनीक और इंटरनेट ने युवाओं और महिलाओं को शिक्षा, रोजगार और सरकारी योजनाओं तक पहुँच प्रदान कर उन्हें सशक्त बनाया है, वहीं पारंपरिक निर्णय प्रक्रियाओं और सामुदायिक ढांचे में परिवर्तन भी आया है। महिलाओं में आत्मनिर्भरता और सामाजिक सहभागिता बढ़ी है और युवाओं ने ऑनलाइन शिक्षा तथा रोजगार के माध्यम से व्यक्तिगत निर्णय लेने की क्षमता विकसित की है। इसके साथ ही सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्म ने सामाजिक जागरूकता और संपर्क के नए अवसर उपलब्ध कराए हैं, जबकि पारंपरिक सांस्कृतिक मूल्यों पर मिश्रित प्रभाव भी देखा गया है। हालांकि, ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट और डिजिटल उपकरणों की सीमित उपलब्धता, प्रशिक्षण की कमी और डिजिटल असमानता अभी भी चुनौतियाँ बनी हुई हैं। इसलिए आवश्यक है कि ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों में डिजिटल प्रशिक्षण और जागरूकता बढ़ाई जाए, इंटरनेट संसाधनों की पहुँच सुनिश्चित की जाए, सरकारी योजनाओं का डिजिटलीकरण और प्रसार बढ़ाया जाए और डिजिटल प्रगति के साथ सामाजिक और सांस्कृतिक संतुलन बनाए रखा जाए, ताकि डिजिटल इंडिया पहल का प्रभाव और अधिक सकारात्मक और समावेशी हो।

संदर्भ –

1. भारत सरकार, डिजिटल इंडिया कार्यक्रम : दृष्टि एवं उद्देश्य, इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय, नई दिल्ली, वर्ष 2019, पृष्ठ 7–9
2. भारत सरकार, डिजिटल इंडिया : कार्यक्रम एवं प्रगति रिपोर्ट, इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय, नई दिल्ली, वर्ष 2018, पृष्ठ 15–22
3. एन. श्रीनिवासन तथा जे. इलावरासन – सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकियाँ तथा भारतीय सामाजिक परिवर्तन, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, वर्ष 2015, पृष्ठ 134–140
4. महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, भारत में महिला एवं डिजिटल सशक्तिकरण, भारत सरकार, नई दिल्ली, वर्ष 2020, पृष्ठ 28–31
5. अमिताभ कुंदू – भारत में नगरीकरण एवं क्षेत्रीय विकास, सेज पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, वर्ष 2014, पृष्ठ 201–206